Sixteenth Loksabha

an>

Title: Regarding safety of women in India.

श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया : महोदया, महिलाएँ देश की अस्मिता हैं। हिन्दू धर्म में महिला देवियों को पूजा जाता है। लेकिन, आज जो स्थिति देश में हो गयी है, हरेक महिला अपने आप को असुरक्षित समझ रही है। महिलाओं पर बलात्कार हो रहे हैं, एसिड अटैक हो रहे हैं, स्टॉकिंग हो रहे हैं। आज देश में कैसी स्थिति हो गयी है? आज देश में इंसानियत नहीं बच रही है, हैवानियत हो गई है। देश में एक भी बलात्कार हो, तो यह हम सबके माथे पर कलंक है। यदि नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के आँकड़े को देखें, तो 40 हजार बलात्कार हर साल देश में हो रहे हैं। नाबालिग बालिकाओं पर बलात्कार के आँकड़े हर साल 19 हजार हैं। ऐसी घटनाएँ हो रही हैं।...*(Interruptions)*... *

माननीय अध्यक्ष : आप ऐसा भाषण दे रहे हो जैसे...

...(व्यवधान)

श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया: गृह मंत्री यहाँ बैठे हैं, मैं उनसे पूछना चाहता हूँ । ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : बैठिए, I am sorry. हर बात की राजनीति नहीं करते हैं।

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : इसकी राजनीति नहीं करते हैं।

...(व्यवधान)

HON. SPEAKER: Nothing will go on record.

...(Interruptions)... *

HON. SPEAKER: Shrimati Santosh Ahlawat Ji, you can start.

...(Interruptions)

माननीय अध्यक्ष : इस विषय पर पॉलिटिक्स नहीं करते हैं। कृपया बैठिए।

...(व्यवधान)

HON. SPEAKER: Nothing will go on record like this.

...(Interruptions)... *

HON. SPEAKER: Nothing will go on record. मैं एक महिला हूँ, इसीलिए बोल रही हूँ। इस विषय पर राजनीति मत करो।

...(Interruptions)... *

माननीय अध्यक्ष : आप बैठिए। मैं समझती हूँ।

...(व्यवधान)

HON. SPEAKER: Nothing will go on record.

...(Interruptions)... *

माननीय अध्यक्ष : संतोष अहलावत जी, आप बोलिए।

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : उनका एक भी शब्द रिकॉर्ड में नहीं जाएगा।

...(Interruptions)... *

माननीय अध्यक्ष : श्री एम.बी. राजेश और एडवोकेट जोएस जॉर्ज को श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया द्वारा उठाए गए विषय से संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।

…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप सब बैठिए। वह बोल रही हैं।

श्रीमती संतोष अहलावत : महोदया, मैं कहना चाहूँगी कि मैं पहली बार चुनकर आयी हूँ। हमारी बातें तो शोरगुल की भेंट चढ़ जाती हैं। उनको तो बोलने की आदत हैं, वे लोग हमें बोलने नहीं देते हैं। …(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: आप अपनी बात कहिए। केवल आपकी बात ही रिकॉर्ड में जाएगी।

…(व्यवधान)